पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
डॉ. ममता मिश्रा

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – डॉ. ममता मिश्रा

समकालीनजीवन की विडंबना :बढ़तीनिकटता ,घटती आत्मीयता

समकालीनजीवन की विडंबना :बढ़तीनिकटता ,घटती आत्मीयता

आजका मनुष्य तकनीकी विकास, संचार साधनों और भौतिक सुविधाओंके कारण पहले कीअपेक्षा कही अधिक निकटदिखाई देता है ।मोबाइलफोन ने दूरियों कोसमाप्त कर दिया ,इंटरनेटने संसार को एक वैश्विकगांव में बदल दियाऔर सोशल मीडिया नेसंवाद के असंख्य माध्यमउपलब्ध करा दिए हैं।व्यक्ति के पास संवादके साधन तो बहुतहै लेकिन संवाद का समय औरमन कम होता जारहा है ।हम लगातारजुड़े हुए हैं फिरभी भीतर से अकेलेहैं। यही समकालीन जीवनकी सबसे बड़ी विडंबनाहै।

आज की विकराल समस्या केवल गरीबी ,बेरोजगारी, प्रदूषण अथवा आर्थिक असमानता तक सीमित नहीं है। उनके समानांतर एक अदृश्य संकट भी विकसित हो रहा है-- भावनात्मक अकेलापन ,संबंधों का क्षरण और मनुष्य का अपने ही अस्तित्व से दूर होते चले जाना। हमने "कनेक्टिविटी" को संबंध और "ऑनलाइन "उपस्थिति को आत्मीयता समझ लिया है ।सोशल मीडिया पर हमारी गतिविधियों को देखने वाले लोग बहुत से हो सकते हैं लेकिन हमारे मौन को समझने वाले कितने हैं यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। एकल परिवार में समस्या तब पैदा होती है जब परिवार में साथ रहने के बावजूद भावनात्मक दूरी बढ़ने लगे ।इस समस्या का सबसे मार्मिक पक्ष वृद्धावस्था से जुड़ा हुआ है ।जिन माता-पिता ने अपने बच्चों को भविष्य के लिए अपना वर्तमान समर्पित कर दिया जीवन के अंतिम चरण में वही माता-पिता कई बार अपने ही घर में उपेक्षित अनुभव करते हैं। प्रश्न यह है कि जिस समाज में अनुभव ,त्याग और वरिष्ठता का सम्मान कभी जीवन मूल्य हुआ करता था ,आज वहां वृद्ध व्यक्ति स्वयं को अनावश्यक क्यों महसूस करने लगा है? आज सफलता का मूल्यांकन प्राय: वस्तु ,पद आय और सामाजिक प्रतिष्ठा से किया जाता है ।

।वर्चुअल संसार में व्यक्ति अपने जीवन का अक्सर वही पक्ष प्रस्तुत करता है जिसे वह दूसरों को दिखाना चाहता है। परिणाम स्वरुप तुलना की प्रवृत्ति बढ़ती है यह प्रश्न संबंधों पर हावी हो जाता है तो प्रेम मित्रता त्याग और आत्मीयता जैसी मानवीय संवेदनाएं कमजोर पड़ने लगते हैं।

हमअपेक्षाएं बहुत रखते हैं।शिकायत भी बहुत करतेहैं किंतु संवाद कम करते हैंऔर आत्ममंथन भी ।इसीलिए अकेलेपनका समाधान केवल बाहरी परिस्थितियोंको बदलने से नहीं बल्किमनुष्य के भीतर संवेदना, धैर्य, संवाद और आत्मीयता कोपुनर्जीवित करने में भीहै। हमें यह स्वीकारकरना होगा कि कभी-कभी किसी व्यक्तिको सलाह से अधिकसाथ की आवश्यकता होतीहै समाधान से अधिक सहानुभूतिऔर शब्दों से अधिक किसीके पास चुपचाप बैठनेकी आवश्यकता होती है। परिवारमें प्रतिदिन कुछ समय केवलबातचीत के लिए होनाचाहिए ।वृद्धजनों के अनुभवों कोबोझ नहीं जीवन कीधरोहर समझना चाहिए ।बच्चों को केवल प्रतियोगिताके लिए नहीं संवेदनाऔर सह अस्तित्व केलिए भी शिक्षित करनाहोगा। आज विकास कीपरिभाषा पर पुनर्विचार कीआवश्यकता है ।यदि आर्थिकविकास मनुष्य को संवेदनशील बनादे, तकनीकी विकास उसे संबंध हीनबना दे और सामाजिकप्रगति उसे अकेला करदे तो हमें यहअपने आप से पूछनाही होगा कि हमविकास किसके लिए कर रहेहैं ? यही हमारे समयकी त्रासदी है ,अंतत समकालीनसमाज के सामने सबसेआवश्यक प्रश्न यही है कि "हम कितने लोगों से जुड़े हैं"? से अधिक महत्वपूर्ण यहहै कि "कितने लोग वास्तव मेंहमसे जुड़े हुए हैं"।

समकालीनजीवन की विडंबना यहनहीं है कि मनुष्यके पास संबंधों केसाधन कम है ,विडंबनायह है कि साधनबढ़ते हुए भी संबंधोंकी आत्मीयता घटती जा रहीहै ।दूरी मिटाने वाली तकनीकी नेभौगोलिक सीमाएं कम कर दी।पहलेआस पड़ोस, परिवार और संयुक्त परिवारमें सुख-दुख साझाकरने की परंपरा थी, परंतु धीरे-धीरे छोटेपरिवार होते गए जीवनव्यस्त रहता गया, व्यक्तिगतमहत्वाकांक्षाएं बढी,परिणाम स्वरुपलोगों के बीच रहतेहुए भी भीतर सेमनुष्य अकेला अनुभव करने लगा। व्यक्तिके पास सैकड़ो - हजारोंऑनलाइन मित्र हो सकते हैंलेकिन आवश्यता के समय उसकेपास केवल उसकी बातका सुनने वाला कोई भीनहीं है। आभासी संबंधोंकी संख्या बढ़ी है किंतु आत्मीयता और संवेदना कास्तर कई बार घटगया है। यह समस्याव्यक्तिगत भी हो सकतीहै विशेष रूप से वृद्धावस्था ,सेवानिवृत्ति ,बच्चों के दूर चलेजाने या जीवनसाथी केअभाव में यह स्थितिऔर अधिक गंभीर होसकती है ।अकेलापन केवलव्यक्तिगत समस्या नहीं है यहसामाजिक संरचना की कमजोरी कासंकेत भी है।

इस समस्या का समाधान तकनीक को छोड़ देना नहीं बल्कि तकनीक और मानवीय संवेदनाओं के बीच संतुलन स्थापित करना है ।

परिवारमें संवाद की संस्कृति विकसितकरनी होगी ,बच्चों और बुजुर्ग केसाथ समय बिताना होगा ,मित्रता को केवल सोशलमीडिया के कनेक्शन तकसीमित न रखकर वास्तविकजीवन के सहयोग मेंबदलना होगा ।यदि हमअपने परिवार में संवाद समाजमें सहयोग जीवन में संवेदनाको स्थान दें तो अकेलेपनकी इस विकराल समस्याको काफी हद तककाम किया जा सकताहै।

-डॉ. ममता मिश्रा

लेखक परिचय

डॉ. ममता मिश्रा

अवकाशप्राप्त प्रधानाध्यापिका

कुल्टीहिंदी बालिका विद्यालय, पश्चिम बंगाल

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**डॉ. ममता मिश्रा**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...